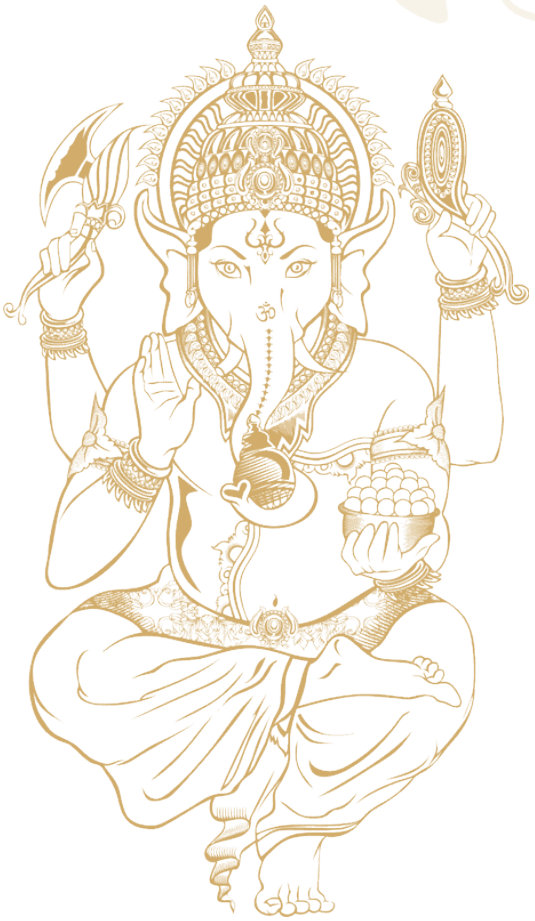

Kamini jain

27 Sep 1980

06:03 AM

Begamganj

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121442901

तिथि 27/09/1980 **समय** 06:03:00 **वार** शनिवार **स्थान** Begamganj **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:35:04
अक्षांश 23:36:00 उत्तर **रेखांश** 78:20:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:16:40 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	06:10:11 घं
वेलान्तर	00:09:00 घं
सूर्योदय	06:06:45 घं
सूर्यास्त	18:08:52 घं
चैत्रादि संवत	2037
शक संवत	1902
मास	आश्विन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	3
नक्षत्र	भरणी
योग	हर्षण
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ली-लीना
पाया(रा.-न.)	लौह-स्वर्ण
होरा	मंगल
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

शुक्र 15वर्ष 7मा 10दि

राहु

09/05/2019
09/05/2037

राहु	19/01/2022
गुरु	14/06/2024
शनि	21/04/2027
बुध	07/11/2029
केतु	26/11/2030
शुक्र	26/11/2033
सूर्य	20/10/2034
चन्द्र	20/04/2036
मंगल	09/05/2037

योगिनी

भद्रिका 3वर्ष 10मा 25दि

उल्का

22/08/2020
23/08/2026

उल्का	23/08/2021
सिद्धा	23/10/2022
संकटा	22/02/2024
मंगला	23/04/2024
पिंगला	22/08/2024
धान्या	21/02/2025
भ्रामरी	23/10/2025
भद्रिका	23/08/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			08:44:39	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			10:28:23	कन्या	हस्त	1	चंद्र	चंद्र	सम राशि	1.15	मातृ	पितृ	विपत
चंद्र			16:15:28	मेष	भरणी	1	शुक्र	चंद्र	सम राशि	1.16	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			25:43:15	तुला	विशाखा	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.22	अमात्य	भ्रातृ	साधक
बुध			02:19:36	तुला	चित्रा	3	मंगल	केतु	मित्र राशि	1.16	ज्ञाति	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			00:06:41	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	राहु	शत्रु राशि	1.18	कलत्र	धन	सम्पत
शुक्र			27:23:23	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	गुरु	शत्रु राशि	1.39	आत्मा	कलत्र	मित्र
शनि		अ	07:06:24	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	केतु	मित्र राशि	1.09	पुत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		25:42:58	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	राहु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		25:42:58	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

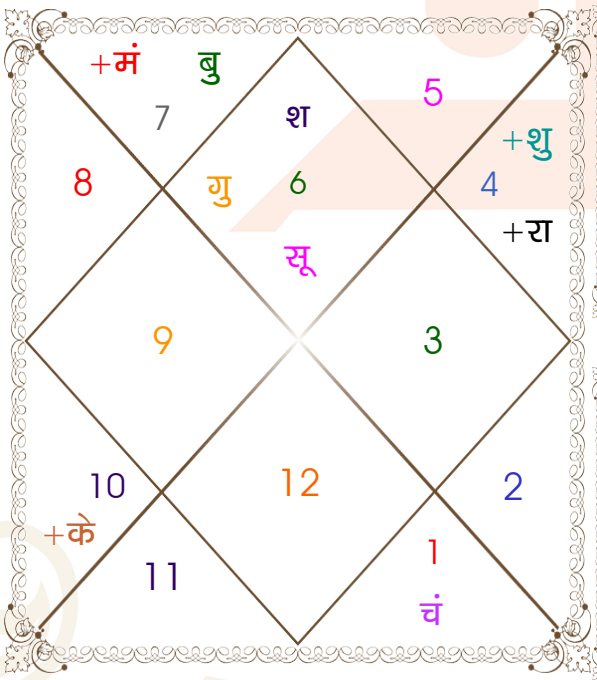

चन्द्र कुंडली

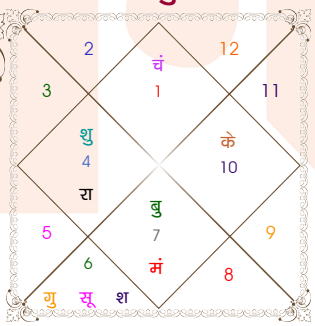

नवमांश कुंडली

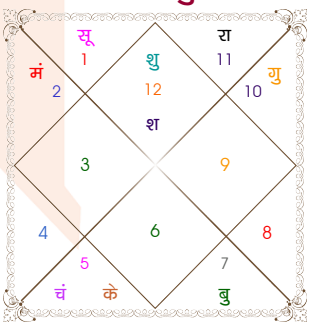

सर्वाष्टकवर्ग

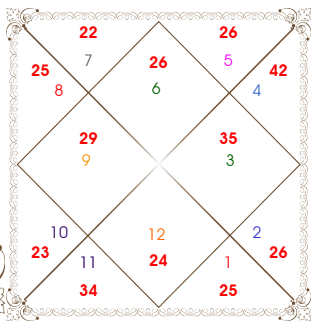

दशमांश कुंडली

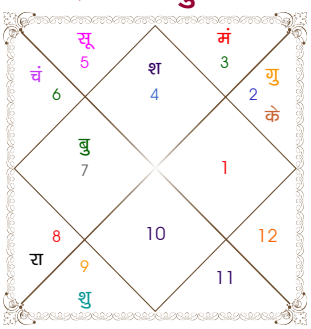

नक्षत्रफल

आप भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप की जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। आपका वर्ण क्षत्रिय गण मनुष्य, गजयोनि, मध्य नाडी तथा मृग वर्ग हैं। भरणी के प्रथम चरण में उत्पन्न होने के कारण आपका जन्म नाम लि या ली अक्षर से प्रारम्भ होगा। यथा लिली।

भरणी नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप मनोरंजन के कार्यक्रमों तथा खेलकूदों को अधिक महत्व प्रदान करेंगी। फलस्वरूप आपका अधिकांश समय मनोरंजन या खेलकूद में ही व्यतीत होगा। पानी से आप स्वभाविक रूप से भयभीत रहेंगी जिससे यदा कदा स्नान करने तक की आप उपेक्षा करेंगी। आपकी प्रकृति चंचल होगी तथा आपका व्यवहार अन्य लोगों के साथ सामान्य रहेगा।

सदापकीर्ति र्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरूश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।
जातकाभरणम्

अर्थात भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरू, चंचल प्रवृति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप मन में दृढ संकल्प को रखने वाली होंगी अर्थात् जो भी कार्य करेंगी उसे पूर्ण करेंगी तथा सत्य का आप हमेशा पालन करेंगी। आपका शरीर स्वस्थ एवं सुन्दर होगा एवं बीमारियां अल्प मात्रा में ही होंगी। कार्यशैली आपकी चतुराई पूर्ण ढंग की होगी जो भी कार्य करेंगी दक्षता से करेंगी किसी को भी आलोचना का अवसर नहीं मिलेगा। अतः जीवन में आप सुखी रहेंगी।

कृत निश्चयः सत्यारूग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आपकी दृढ़ता जिदद या हठ में परिवर्तित हो जाएगी। इससे आपको तथा अन्य जनों को परेशानी होगी। सम्पत्ति धन दौलत तथा ऐश्वर्य से आप हमेशा युक्त रहेंगी तथा किसी प्रकार का अभाव नहीं रहेगा। आपकी शारीरिक स्वस्थता बनी रहेगी तथा मुखाकृति भी सुन्दर तथा मनमोहक होगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढब्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते है।

समय समय पर आपको मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति होगी। यदा कदा किसी कारण वश आप कठोर भावों का भी प्रर्दशन करेंगी। करेंगी। परन्तु धनवान होकर धन से आप सुसम्पन्न रहैंगी तथा सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगी

याम्यर्क्षे विकलोऽन्यदारनिरतः क्रूरः कृतध्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

आप जन्म के समय लौहपाद में उत्पन्न हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से युक्त रहता हैं। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति अत्यन्त ही शुभ राशि में है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमती महिला होंगी तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी। आपकी आयु पूर्ण आयु रहेगी तथा जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप यत्न पूर्वक सफल रहेंगी। साथ ही आनन्द पूर्वक इसका उपभोग करेंगी। लेकिन स्वास्थ्य से आप मध्यम रहेंगी एवं समय समय पर श्वास कफादि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगी। कुल मिलाकर आपका सामान्य जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

मेष राशि में जन्म लेने के कारण आप अल्प भोजन करना पसन्द करेंगी। तथा अपने अन्य भाई-बहनों में श्रेष्ठ रहेंगी।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका शरीर ताम्रवर्ण के समान गौर वर्ण से युक्त होगा तथा नेत्र लाली लिए हुए गोल होंगे। आप के हाथ तथा पैर कमल की कान्ति के समान होंगे। जल से स्वाभाविक भय आपके मन में रहेगा। जीवन के प्रत्येक कार्य को आप साहसपूर्वक सम्पन्न करेंगी तथा कठिनाईयों का डटकर प्रतिरोध करेंगी। समाज से आपको यथोचित आदर तथा सम्मान मिलेगा आपकी बुद्धि में चंचलता का समावेश रहेगा तथा धन को आप सम्मान तथा आदर से भी अधिक महत्व प्रदान करेंगी जिससे समय समय पर परेशानियां उत्पन्न होंगी। आपको सहयोगियों तथा मित्रों का अधिक संख्या में सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही पुत्र संतति भी कन्याओं से अधिक होगी। पुरूष जाति पर आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा। सर्वसाधारण के प्रति आपका स्नेहयुक्त व्यवहार रहेगा। अपने सद्व्यवहार तथा विनयशीलता के कारण आपको उचित मान सम्मान की

प्राप्ति होगी ।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चत्रचलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू र्व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप स्वभाव से शीघ्र क्रोध करने वाली तथा तत्पश्चात् शीघ्र ही प्रसन्न होने वाली होंगी। आपकी प्रवृति भ्रमणशील होगी तथा ऐसे स्थानों पर घूमने की इच्छा होगी जो दूर हों। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि भी हो सकते हैं। लेकिन सबके साथ सहयोग करना आप अपना प्रमुख कर्तव्य समझेंगी। साथ ही अपनी विषम परिस्थितियों में भी दूसरों की सहायता करेंगी।

वृताताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेङतोळति चपलस्तोये च भीरुः किये।।
बृहज्जातकम्

धन को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान करना आपके बुर्जुगों तथा संबधियों की असन्तुष्टि का कारण बनेगी फलस्वरुप या तो वे आपसे अलग हो जांएगे या आप स्वयं उनसे अलग हो जाएंगी। चूंकि घर के सारे कार्यो में प्रमुखता आप की ही रहेंगी तथा आपके पति सारे कार्य आपकी सहमति से ही करेंगे। अतः सम्बन्धियों तथा बुजुर्गो से वैमनस्य की वृद्धि होती जाएगी। धन का आप आजीवन उपभोग करेंगी तथा पुत्रों से युक्त रहेंगी एवं समाज में कीर्ति व्याप्त रहेगी।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण करने या सैर करने के लिए आप ऐसे स्थानों पर जाने की इच्छा करेंगी जो अगम्य हों तथा जहां सरलता से न जाया जा सके। सामाजिक संबंधों की विस्तृतता के कारण समय समय पर आप अभक्ष्य पदार्थो अर्थात् मांस, मदिरा इत्यादि का भी उपभोग कर सकती हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपका स्वभाव कभी कभी उग्र हो जाएगा। इस उग्रता से कई अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। नैसर्गिक रूप से प्रवृति भी आपकी चंचल रहेगी तथा अवसरानुकूल आप मिथ्याभाषण भी करेंगी।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोऽनृतोक्ति व्रणाङ्कताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाओं में भी आप की अभिरूचि रहेगी। आप पित्तकारक या ऐसे पदार्थों का भक्षण न करें या अल्प मात्रा में करें जिनसे शरीर या मस्तिष्क पर गरमी का प्रभाव होता हो। नहीं तो मस्तिष्क में विकार का योग बनता है। दुर्घटनाओं से भी बचें तथा शारीरिक सुरक्षा का ध्यान रखें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आप मनुष्य गण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म से ही धार्मिक प्रवृति होगी। देवता तथा ब्राह्मणों की आप श्रद्धा पूर्वक सेवा तथा सत्कार करेंगी। आप धनवती तथा अभिमानी भी होंगी। दया का भाव आपके मन में विद्यमान रहेगा। दीन दुःखियों की आप प्रयत्न से सेवा तथा मदद करेंगी। आप कई कलाओं की जानने वाली होंगी। बल का आप में अभाव नहीं रहेगा। ज्ञान प्राप्त करने में भी आपकी विशिष्ट रूचि रहेगी। आपका शरीर सुन्दर कान्ति से सुशोभित रहेगा। आप बहुत से लोगों को सुख प्रदान करेंगी तथा काफी लोग आपकी छत्रछाया में रहेंगे।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप हमेशा मान सम्मान से परिपूर्ण रहेंगी तथा जीवन पर्यन्त विपुल धन की स्वामिनी बनी रहेंगी। आपकी आखें बड़ी बड़ी होंगी तथा निशानेबाजी की आप विशेषज्ञा होगी। आपके शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने वाली होगी। आप किसी नगर या समूह की प्रतिष्ठित महिला भी हो सकती हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गजयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप राजा की प्रिय होंगी अर्थात् उच्च अधिकारियों तथा मंत्रियों से आपके घनिष्ठ संबंध होंगे तथा वे सब आपको आदर की दृष्टि से देखेंगे। आप आत्म बल तथा बाहुबल से भी युक्त रहेंगी। अपने सारे कार्य स्वयं के बल पर ही सम्पन्न करेंगी। समस्त सांसारिक एवं भौतिक सुखों का आप उपभोग करेंगी। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी की सहयोगी अथवा खुद उच्चाधिकारी हो सकती हैं। प्रारम्भ से ही आप अति उत्साही रहेंगी तथा इसी प्रवृति से अपने समस्त कार्यों को आसानी से सम्पन्न करेंगी।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से परेशानी उत्पन्न होती रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको सर्वप्रकार से वे आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उनके द्वारा आपको विशेष धन की प्राप्ति भी हो सकती है।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रहेगा एवं उनका कहना मानने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। उनकी सेवा करना तथा वांछित सहयोग प्रदान करना आप अपना नैतिक कर्तव्य समझेंगी। आप के मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा फिर भी आपसी संबंध सामान्य ही समझें जाएंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं

धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण दोनों पक्षों की, मघा नक्षत्र, विष्कुम्भ योग, बवकरण, रविवार, प्रथम प्रहर तथा मेष राशि का चन्द्रमा अशुभ रहेगा अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, लेन देन साझेदारी आदि न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी तथा परिणाम सन्तोष प्रद नहीं रहेंगे।इसके अलावा 1,6,11 तिथियां, बवकरण, मघानक्षत्र, रविवार, प्रथम पहर तथा मेष राशि के चन्द्रमा में भी शुभ कार्य का विचार त्याग दें। ऐसे समय पर आपको शरीर का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए।

जब समय आपको अनुकूल न लग रहा हो चारों तरफ से परेशानियां उत्पन्न हो रही हो अथवा मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता का आभास हो रहा हो, व्यापार में हानि अथवा नौकरी में कोई परेशानी उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट श्री हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए। इसके साथ ही सोना, तांबा, घी, गुड, रक्तवस्त्र, लाल कनेर का फूल इत्यादि पदार्थो का दान करना चाहिए। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7 हजार जप भी करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी कमी होगी। इसके अतिरिक्त मंगल वार के उपवास भी शुभ रहेंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।